देवी-देवताओंकी उपासना : खंड २

श्रीविष्णु, श्रीराम एवं श्रीकृष्ण

(Hindi)

संकलनकर्ता

卐 परात्पर गुरु डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

('संतपद' अथवा 'गुरुपद' अर्थात ७० प्रतिशत, तथा 'परात्पर गुरुपद' अर्थात ९० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर !)

卐 पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

यह ग्रंथ स्वयं पढें और धर्मकार्यके रूपमें अन्योंसे भी पढवाएं !

सनातनकी ग्रंथसंपदाकी अद्वितीयता

सनातनके अधिकांश ग्रंथोंमें दिया ३० से ८० प्रतिशत ज्ञान ऐसा है जो अबतक पृथ्वीपर अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है !

भूमिका

श्रीविष्णु, श्रीराम एवं श्रीकृष्ण, अनेक श्रद्धालुओंके आस्थाकेंद्र हैं । कुछ हिंदुओंके ये सांप्रदायिक उपास्यदेवता हैं । बहुतांश उपासकोंको देवतासंबंधी जो थोडी-बहुत जानकारी रहती है, वह अधिकतर पढी-सुनी कथाओंसे होती है । ऐसी अल्प जानकारीके कारण देवताओंपर उनका विश्वास भी अल्प ही होता है । देवताओंकी अध्यात्मशास्त्रीय जानकारीसे उनके प्रति श्रद्धा निर्माण होती है एवं श्रद्धासे भावपूर्ण उपासना होती है । भावपूर्ण उपासनासे ईश्वरकी अनुकंपा शीघ्र होती है । इसी उद्देश्यसे इस ग्रंथके अंतर्गत श्रीविष्णु तथा उनके अवतार, श्रीराम एवं श्रीकृष्णसे सबंधित दुर्लभ तथा उपयुक्त जानकारी दी गई है ।

इस ग्रंथमें दी अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी उन विशिष्ट देवताके भक्तोंके लिए एवं विशिष्ट देवताकी सांप्रदायिक साधना करनेवालोंके लिए निश्चित ही उपयुक्त होगी; परंतु सामान्य व्यक्ति इस संदर्भमें निम्नांकित नियम ध्यानमें रखें । कुछ लोगोंको गणपति अथर्वशीर्ष पढनेपर गणपतिकी एवं शिवलीलामृतका पठन करनेपर शिवकी उपासना करनेकी इच्छा होती है । इसी प्रकार इस ग्रंथमें दी गई देवतासंबंधी जानकारी पढकर कुछ लोगोंको उसी क्षणसे उनकी उपासना करनेकी इच्छा हो सकती है । ध्यानमें रखें कि श्रीविष्णु, श्रीराम एवं श्रीकृष्ण जैसे देवताओंकी उपासनासे सबकी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र नहीं होती; क्योंकि उनके लिए जिस देवताकी उपासना आवश्यक है, वही करनेसे अधिक लाभ होता है, अन्यथा अधिक साधना करनेपर भी प्रगति अल्प होती है । सामान्य मनुष्य नहीं जान सकता कि किस देवताकी उपासना आवश्यक है । आध्यात्मिक दृष्टिसे उच्च व्यक्ति (संत/गुरु) ही बता सकते हैं । इसलिए सामान्यजन केवल जानकारी हेतु यह ग्रंथ पढें । उक्त देवताओंकी अनुभूति होनेकी दृष्टिसे साधनाके पहले चरणके रूपमें कुलदेवताका नामजप करें । आगे गुरु उक्त किसी भी देवताका नामजप करनेके लिए कहें अथवा साधनामें विशिष्ट चरण साध्य करनेके उपरांत आगेकी आध्यात्मिक उन्नति हेतु किसी देवताकी उपासना आवश्यक हो, तो ऐसेमें उस देवताकी जानकारी श्रद्धामें सहायक होती है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि यह ग्रंथ पाठकोंको अपने इष्टदेवताके प्रति अटूट श्रद्धा एवं भक्तिभावमें सहायता प्रदान करे ! - **संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र'के सर्व खंडोंकी संयुक्त भूमिका हेतु 'धर्मका मूलभूत विवेचन' ग्रंथ देखें ।)

अध्याय १

श्रीविष्णु

अनुक्रमणिका

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ २१

२. कुछ अन्य नाम २१

२ अ. भगवान २२

२ आ. नारायण २३

२ इ. किरीटधारी २४

२ ई. लक्ष्मीपति २४

२ उ. हरि एवं श्रीहरि २५

३. कार्य एवं विशेषताएं २५

३ अ. अन्नरसदेवता (प्राणिमात्रका पोषण करनेवाले) २५

३ आ. भक्तवत्सल २५

३ इ. सतत वचन देनेवाले एवं पालन करनेवाले २६

३ ई. विश्वका समतोल रखनेवाले २६

३ उ. स्थिर देव २६

३ ऊ. सर्वप्रथम गुरु २६

३ ए. धन एवं द्रव औषधियोंका वायु-औषधिमें रूपांतर करनेवाले २७

३ ऐ. शारीरिक विशेषताएं २७

३ ओ. कुंडलिनीयोग एवं विष्णु २८

४. निवास एवं विष्णुलोक (वैकुंठ) २८

५. रूप एवं परिवार २९

६. मूर्तिविज्ञान ३५

७. उपासनाविधि ३७

८. दशावतार ४३

९. कालानुसार आवश्यक उपासना ५१

अध्याय २

श्रीराम

अनुक्रमणिका

१. रामायण ५५

२. श्रीरामके कुछ नामोंका उद्‌गम - राम, रामचंद्र, श्रीराम ५८

३. रामपरिवार एवं अवतार ५९

४. विशेषताएं एवं कार्य ५९

४ अ. सर्वार्थसे आदर्श ४ आ. धर्मपालनकर्ता ६०

४ इ. एकवचनी ४ ई. एकबाणी ६१

४ उ. अति-उदार ४ ऊ. सदैव स्थितप्रज्ञ रहनेवाले ६२

४ ए. मानवता ४ ऐ. रामदास एवं रामराज्य ६३

५. सात्त्विक चित्र एवं नामजप-पट्टी ६४

६. रामायणमें उल्लेखित कुछ नामोंका भावार्थ ६५

७. रामायणके कुछ प्रसंगोंका भावार्थ ६६

७ अ. 'भूमिकन्या सीता ७ आ. कैकेयीका वर मांगना ६७

७ इ. भरतका रामकी पादुका मांगना ७ ई. भरतका नंदिग्राममें रहना ६८

७ उ. लक्ष्मणका वनवासी जीवन ७ ऊ. सीताहरण ६८

७ ए. रामका वृक्षोंको आलिंगन ७ ऐ. वालीका वध ६९

७ ओ. रावणवध ७ औ. रजकका सीतापर आरोप ६९

७ अं. शंबुकवध ६९

७ क. श्रीरामका सरयु नदीमें देहत्याग करना ७०

८. श्रीरामकी उपासना एवं साधक ७०

९. हमारे जीवनमें रामायण ७५

१०. कालकी आवश्यकतानुसार देवताओंकी उपासना है, देवताओंका अनादर रोकना ! ७५

अध्याय १४

श्रीकृष्ण

अनुक्रमणिका

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ ७९

२. अन्य नाम : वासुदेव ७९

३. जन्म ७९

४. कुछ परिजन एवं सगे-संबंधियोंका भावार्थ ८०

५. विशेषताएं एवं कार्य ८१

५ अ. बचपन ८१

५ आ. शारीरिक ८२

५ इ. ऐतिहासिक ८३

५ ई. कौटुंबिक ८३

५ उ. कलाविषयक ८३

५ ऊ. सामाजिक ८३

५ ए. राजनीतिकुशल ८४

५ ऐ. युद्धसंबंधी ८५

५ ओ. निःस्वार्थी ८५

५ औ. नम्र ८५

५ अं. महान तत्त्ववेत्ता ८५

५ क. गुरु ८६

५ ख. ईश्वरीय गुणोंवाले ५ ग. विशेषताओंका परिणाम ८६

६. राधा ८७

६ अ. जन्म ६ आ. विशेषताएं ८७

६ इ. राधा-श्रीकृष्णके नातेसंबंधी आरोपकी व्यर्थता ८८

६ ई. मुरली ६ उ. रासलीला (रासक्रीडा) ८८

७. सुदर्शनचक्र ८७

८. महाभारत ८९

९. गीता ८९

१०. देहत्याग ९०

११. जीवनका घटनाक्रम ९१

१२. निवास (गोलोक) ९२

१३. मूर्तिविज्ञान ९२

१३ अ. बालरूप १३ आ. मुरलीसहित ९३

१३ इ. पार्थसारथी ९३

१४. सात्त्विक चित्र एवं नामजप-पट्टी ९३

१५. श्रीकृष्णकी उपासना ९६

१५ अ. इतिहास ९६

१५ आ. श्रीकृष्णकी उपासना अंतर्गत कुछ नित्य कृत्य ९६

१५ इ. श्रीकृष्णकी पूजामें श्रीकृष्ण-तत्त्व आकर्षित एवं प्रक्षेपित करनेवाली आकृतियोंका उपयोग करना ९७

१५ ई. गोकुलाष्टमी ९८

१५ उ. गोपीचंदन ९९

१५ ऊ. 'हरे राम हरे राम.... हरे हरे ।' जप ९९

१५ ए. कृष्णगायत्री ९९

१५ ऐ. यंत्र एवं बीजमंत्र १००

१५ ओ. अनिष्ट शक्तियोंके निवारणार्थ उपासना १००

१५ औ. प्रमुख संप्रदाय १००

१६. रामायण एवं महाभारत १००

१७. श्रीराम एवं श्रीकृष्ण १०१

१८. कालकी आवश्यकतानुसार देवताओंकी उपासना है, देवताओंका अनादर रोकना १०६